ISSN - 2231 - 2749

NUMBER - 29

2016

JOURNAL OF THE MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD

EDITORS

S.D. Guru

Dr. R.K. Sharma

Dr. Suresh Mishra

Journal of Madhya Pradesh Itihas Parishad
No. 29/2016/ISSN 2231-2749

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में छत्तीसगढ़ अंचल के स्त्रियों की भूमिका - एक अध्ययन

डॉ. सीमा पाण्डेय
अध्यक्ष-इतिहास विभाग
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्त्री के बिना किसी भी समाज की परिकल्पना करना सम्भव नहीं है। बदलते परिवेश के साथ-साथ स्त्रियों की स्थिति में भी अनेकानेक परिवर्तन होते रहे है। 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति में सुधार लाने के लिए प्रयास किये गये। जो बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक जारी रहे। बीसवीं शताब्दी में महात्मा गांधी के अभ्युदय से तो महिलाओं में नवजीवन का संचार हो गया। उन्होंने सोई हुई महिलाओं को न केवल जगाया बल्कि उनके गौरव व महत्व को समझा और समझाया।[1] असहयोग व सविनय अवज्ञा आन्दोलन एक ही वृक्ष की दो शाखाएँ है। सत्याग्रह सत्य का बोध है और ईश्वर सत्य है, अहिंसा वह प्रकाश है जो सत्य को प्रकट करता है। स्वराज्य उसी सत्य का एक अंग है।

1930 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में स्त्रियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया लगभग सभी प्रान्तों में उन्होंने जुलूसों से लेकर सरकारी कानून तक तोड़े तथा विदेशी वस्तुओं की दुकानों के सम्मुख धरने दिये। गांधीजी की योजना थी कि स्त्रियाँ दाण्डी यात्रा में भाग न लेकर स्थानीय स्तर पर हड़ताल धरना तथा प्रदर्शन करे तो उनकी शक्ति का सही उपयोग हो सकता है उनका विश्वास था कि ब्रिटिश सरकार स्त्रियों पर हमला करने में हिचकिचायेगी। उनके शब्दों में जैसे हिन्दू गाय को प्रताड़ित नहीं कर सकता वैसे अंग्रेज जहाँ तक हो सकेगा महिलाओं पर अत्याचार नहीं करेगा।[2]

ऐतिहासिक दाण्डी यात्रा के पश्चात् समूचे देश में सविनय अवज्ञा आन्दोलन का दौर आरंभ हो गया। स्थान-स्थान पर लोग नमक बनाकर ब्रिटिश सरकार के कानूनों की अवज्ञा की स्त्रियों ने भी इस आन्दोलन में पुरूषों के बराबर भाग लिया। सरोजनी नायडू ने धरासाना में सत्याग्रहियों का नेतृत्व करते हुए मई 1930 में नमक कानून तोड़ा। बम्बई में कमला देवी चट्टोपाध्याय तथा लीलावती मुंशी के नेतृत्व में हजारों महिलाओं ने चौपटी पर धरना दिया तथा समुद्र से नमक बनाया।[3]

गांधीजी के पुकार पर हजारों की संख्या में नारियों ने धरना देना आरंभ कर दिया। स्वतंत्रता संग्राम में तो वह इससे पूर्व से ही भाग लेती आ रही थी, फिर क्रांतिकारी संगठन में भी नारियों का हाथ रहा था, परन्तु इतने व्यापक रूप में महिलाओं ने इसके पूर्व कभी आन्दोलन में भाग नहीं लिया था। इस सम्बन्ध में तत्कालीन गृह सचिव का यह वक्तव्य जो ध्यान देने योग्य है जिसमें कहा गया कि उस समय शासन के सामने नारी जागरूक सबसे बड़ी बाधा बनकर उपस्थित हो गया था।[4]

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान छत्तीसगढ़ की महिलाओं ने अत्यधिक सूझ-बूझ का परिचय दिया। रायपुर नगर की महिलाओं द्वारा भी इस आन्दोलन में अभूतपूर्व उत्साह के साथ भाग लिया गया। शासकीय रिपोर्ट

No. 29/2016/ISSN 2231-2749

से इस बात की पुष्टि होती है। कि इस अवधि में धरना आन्दोलन में कांग्रेस को महिला स्वयं सेविकाओं की सहायता लेनी पड़ी थी।

छत्तीसगढ़ अंचल की महिलाओं द्वारा शराब और विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरने जारी रहे। मध्यमवर्गीय एवं मजदूर वर्ग की महिलाओं ने भी सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सक्रिय योगदान दिया। रविशंकर शुक्ल की पत्नी भवानी शुक्ल ने भी कन्या कुब्ज समाज की स्त्रियों को प्रोत्साहित किया कि वे राजनीति में सक्रिय भाग ले। इस प्रोत्साहन के फलस्वरूप रायपुर की महिलाओं ने महात्मा गांधी के आन्दोलन को अपना सहयोग दिया। प्रभात फेरियाँ निकाली, विदेशी कपड़ों का त्याग एवं शराब की दुकानों में धरना देना का कार्य किया।[5]

डॉ. राधाबाई रायपुर की प्रसिद्ध समाज सेविका यह महसूस करने लगी कि रायपुर वासियों को तभी सुख व शांति का अनुभव हो सकता है जब भारत की ब्रिटिश प्रशासन के चंगुल से मुक्ति मिलेगी। डॉ. राधा बाई के प्रयासों से सत्याग्रही बहनों का एक जत्था तैयार हुआ जिसमें सुप्रसिद्ध समाज सेवी डॉ. खूबचंद बघेल की वृद्धा माँ केतकी बाई, कांग्रेस वालेंटियर मनोहर लाल की माँ रूक्मणी बाई तथा फूलकुंवर बाई, श्रीमती रोहनी बाई परगनिहा एवं जुमना बाई थी। राधा बाई पिकेटिंग करते हुए गिरफ्तार कर ली गई, केतकी बाई को वृद्ध समझकर छोड़ दिया गया। इससे उन्हें अत्यंत गलानी हुई। उन्होंने तब तक अन्न जल ग्रहण नहीं किया जब तक उनकी गिरफ्तारी नहीं हुई।[6]

रायपुर के देवालयों को सत्याग्रह स्थल में बदल दिया गया। महंत लक्ष्मी नारायण दास की पुरानी बस्ती स्थित जैतुसावगढ़ सत्याग्रह का सबसे बड़ा प्रेरणा का केन्द्र था। एकादशी महात्मय सुनने आयी महिलाऐं देश की स्थिति पर विचार करती थीं। महंत लक्ष्मी नारायण दास की वृद्धा माँ श्रीमती पार्वती बाई सत्याग्रही महिलाओं को आशीर्वाद देकर जुलूस में भेजती थी इसका नेतृत्व अंजनी बाई, फूलकुंवर बाई श्रीवास्तव एवं जानकी बाई पाण्डे के हाथ में था।

सत्याग्रह का दूसरा प्रमुख केन्द्र बुढ़ापारा स्थित वामन राव लाखे का बाड़ा था। इसकी समानेत्री पं. रविशंकर शुक्ल की पत्नी भवानी बाई थी। जुलुस का नेतृत्व श्रीमती इंदिरा बाई ताल्वे द्वारा एवं उमाबाई व काशी बाई द्वारा किया जाता था। कंकाली पारा स्थित लक्ष्मीनारायण मंदिर सत्याग्रह का तीसरा स्थान था। इसकी सभा देवी रूक्मणी बाई तिवारी थी। चौथा स्थान था तात्यापारा स्थित डॉ. राधाबाई का मकान। इसका नेतृत्व करती थी डॉ. राधा बाई, पार्वती बाई, रोहणी बाई, कृष्णा बाई, सीता बाई, राजकुंवर बघेल केतकी बाई बघेल, गंगा बाई, यशोदा बाई परगनिहा। पिकेटिंग के दौरान खूबचंद बघेल की माँ एवं पत्नी तथा प्रकाशवती मिश्रा ने सभी महिलाओं को विकेटिंग के लिए प्रेरित किया।[7]

महिलाओं में सबसे पहले पर्दाप्रथा पर प्रहार किया। इसका विरोध सर्वप्रथम मारवाड़ी समाज द्वारा किया गया जहाँ सबसे यह प्रथा विद्यमान थी। मोती लाल कोठारी का बाड़ा जहाँ हाईस्कूल है। महिलाओं का सभा स्थल था। सदर बाजार का जगन्नाथ मंदिर तो राजनैतिक सत्याग्रहियों का स्थान बन गया था।

रायपुर नगर में कई स्थानों पर कांग्रेस कमेटी बनाई गई एवं दो माह के अन्तराल में 10,000 से भी ज्यादा कांग्रेस सदस्य बनाये गये। डिस्ट्रिक्ट कांउसिल भवन एवं इससे सम्बन्धित स्कूलों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। इसे देखकर सरकार ने डिस्ट्रिक्ट कांउसिल भंगकर प्रशासन स्वयं सम्भाल लिया। समस्त क्लर्क एवं शिक्षकों को जिन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया था, उन्हें या तो नौकरी से निकाल दिया गया था या तो जेल भेज दिया गया। इस आन्दोलन में जनजागरण ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई सरकार की सत्याग्रहियाँ पर निरंकुश भावनात्मक प्रवृत्ति ने सीधे-सीधे राजनीति के अनभिज्ञ ग्रामीणों में भी आन्दोलन की चिंगारी सुलगायी गाँव वालों ने सरकारी कर्मचारियों को बेगार, रसद और शरण स्थल देना बंद कर दिया। पंचायतों का गठन करके मुखियों नें झगड़ों का निपटारा शुरू कर दिया। उद्योग मंदिर का गठन किया गया। यहाँ से 25 सदस्यों को शिक्षा के उपरांत गांवों की संस्थाओं में भेजा जाता

No. 29/2016/ISSN 2231-2749

था। इसमें महिलाओं का उत्साह उल्लेखनीय था। इन सभी कार्यों का श्रेय ए.आई.सी.सी. मेम्बर पं. रविशंकर शुक्ल को जाता है।[8]

1932 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में रायपुर जिले की कुल 233 महिलाओं ने हिस्सा लिया। जिनमें 11 महिला सत्याग्रहियों को जेल की सजा हुई। केतकी बाई, रूक्मणी बाई और रामवती बाई ने दो-दो बार पेकेटिंग में भाग लिया। 23 मार्च 1932 को कीका भाई की दुकान के सामने धरना दे रही फेटेनिया बाई, मनटोरा बाई, मटोलिन मटकी बाई तथा केजा बाई को तुलिस ने घसीटकर कोतवाली तक ले गये। ऐसी ही दूसरी घटना कीका बाई की दुकान के सामने पुनः घटी श्रीमती रायवती बाई, कुंवर बाई, अमृत बाई को गिरफ्तार किया गया। कोतवाली में उनसे अभद्रता पूर्ण व्यवहार किया गया। उनको माफी मांगने के लिए दबाव डाला गया। फिर रात में उन्हें छोड़ा गया। वे स्टेशन के पास धर्मशाला में रूकी जहाँ पुलिस द्वारा पुनः अभद्र व्यवहार किया गया। इसकी शिकायत उन्होंने डॉ. राधा बाई से की। 3 अप्रैल को एक आम सभा डॉ. राधाबाई की अध्यक्षता में आयोजित की गई जिसमें डॉ. राधा बाई ने महिला सत्याग्रहियों के प्रति दुर्व्यवहार की जानकारी जनता को दी। इस सभा में पुलिस के व्यवहार की तीव्र भर्त्सना की गई।[9]

इन आन्दोलनों में महिलाओं ने सक्रियता और जागरूकता की अनूठी मिशाल रखी कुछ तो पति से पहले ही जेल पहुंच चुकी थी, पार्वती बाई, बेला बाई, रोहनी बाई ऐसी ही महिलाऐं थी। रायपुर नगर की पहली महिला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डॉ. श्रीमती राधाबाई सन 1930 के लेकर 1942 तक सत्याग्रह में भाग लेती रही। उनकी प्रेरणा से छत्तीसगढ़ की अनेक महिलाओं ने सत्याग्रह में भाग लिया। वे जिस विचार को एक बार अपना लेती थी जीवन भर नहीं छोड़ती थी खादी के जीवन भर पहनी। कोतवाली के पास स्थित खादी भंडार की उस समय गांधी जी आश्रम मेरठ की एक शाखा थी जहाँ से चरखा कातना उन्होंने स्वयं सीखा एवं अनेक महिलाओं को सिखाया।[10]

अतः राष्ट्रीय स्तर में जिस प्रकार महिलाओं का योगदान था हमारा छत्तीसगढ़ भी इससे अछूता नहीं था। छत्तीसगढ़ में अंग्रेजों के विरोध में जो चिंगारी सुलग रही थी आजादी लेकर ही शांत हुई। महिलाओं द्वारा किया गया कार्य छत्तीसगढ़ के मानक पटल पर एक अमिट छाप छोड़ गया। जो युगों-युगों तक याद किया जायेगा।

संदर्भ

1. गोड़, राजलक्ष्मी, 'नारी जाति के उद्धारक महात्मा गांधी', मध्यप्रदेश संदेश अंक 42, 29 सितम्बर 1961, पृ. 22
2. 'द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी' खण्ड 43, पृ. 12
3. एगेन्यू, विजय, 'इलीट वोमेन इन इण्डिया पोलिटिक्स', पृ. 43
4. वही, पृ. 44
5. मिश्रा, ज्योत्सना, 'स्वतंत्रता आन्दोलन में रायपुर नगर का योगदान' (शोध प्रबंध), 1990, पृ. 220
6. झा, रेणुका, 'रायपुर जिले में स्वाधीनता आन्दोलन' (शोध प्रबंध), 1981, पृ. 155-56
7. वही, पृ. 155-56
8. ए.आई.सी.सी. पेपर्स फाइल, सं. 24, 'रिपोर्ट ऑफ कांग्रेस वर्क्स महाकौशल' (हिन्दी सी.वी.) मार्च से अगस्त 1930, पृ. 49
9. नायक, ठा.भा. 'छत्तीसगढ़ में गांधी' रविशंकर वि.वि. प्रकाशन, 1970 पृ. 5, रायपुर नगर निगम रिपोर्ट 1971-72, पृ. 40
10. ठाकुर, हरि, 'स्वाधीनता संग्राम में रायपुर नगर का योगदान', म्यूनिसिपल कार्पोरेशन रायपुर, पृ. 145